उपयोगी पत्रिका

विज्ञान प्रगति के अक्तूबर 2014 के अंक में 'हम सुझाएं आप बनाएं' स्तंभ के अंतर्गत श्री अभिनव चौरे द्वारा प्रस्तुत आलेख 'एल पी जी लीकेज अलार्म' से महत्वपूर्ण जानकारी मिली। आज हर घर की किचन में एल.पी.जी. ने अपनी पैठ बना रखी है। लोगों में जागरूकता का अभाव है, जिसके कारण एल.पी.जी. लीकेज से व्यापक जन-धन की हानि हो रही है। मैं 73 वर्ष की उम्र में भी साहित्यिक व सामाजिक आयोजनों में रुचि लेता हूं तथा रसोई गैस उपभोक्ता कल्याण समिति (उ. प्र.) का संरक्षक होने के दायित्व निर्वहन के क्रम में गैस उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के लिए सदैव जागरूक करता रहता हूं। यह लेख मानव कल्याण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। मैंने अपनी समिति की कार्यसूची में विज्ञान प्रगति के इस आलेख को लोगों में बांटने के लिए शामिल कर लिया है। इस आलेख की दो सौ फोटो कॉपी भी करायी हैं। मेरा प्रयास होगा कि राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की हर साल होने वाली विज्ञान प्रतियोगिताओं में इसे भी जोड़ा जाए, जिससे इसका सर्वोत्तम और सुलभ स्वरूप सामने आये। सचमुच ऐसे आलेखों की जितनी भी सराहना की जाए कम है। निर्धन का 'पारम्परिक अन्न, अब स्वास्थ्य हेतु खाता है सम्पन्न' लेख ने हमारे देश की स्वास्थ्य के प्रति प्राचीन काल से ही रही प्रगतिशील सोच को प्रमाणित किया है। जो खाद्यान्न पहले गरीबों, पिछड़ों, अशिक्षितों के माने जाते थे वे आज धनवानों को स्वस्थ व बलवान बनाने के माध्यम बन रहे हैं। पहले बाजारों में जिनकी सुलभता बोरे भर-भर कर होती थी वे आज 250 ग्राम के पाउचों में मिल रहे हैं। दाम भी आसमान छू रहे हैं। इसे कहते है समय चक्र, इससे यह साबित होता है कि हम भारतीय निरोग, स्वस्थ व बलवान इसीलिए थे क्योंकि हमारे ऋषियों, मुनियों ने अपने प्रयोगों से अपने अनुभवों से पहले ही खाद्यान्नों की गुणवत्ता को भली प्रकार परख लिया था। उस अन्न को खाकर सौ साल से अधिक स्वस्थ निरोगी जीवन जीते थे। जिसे सुनकर आज लोग अचरज करते हैं। वह था संयम, नियम, अनुशासित आचार, विचार, व्यवहार का परिणाम जो आजकल निरन्तर कम से कमतर होता जा रहा है और समाज में नई-नई बीमारियां पैदा हो रही हैं। समय है समझने का, समय है संभलने का, अपनी खुशहाल जिन्दगी के लिए...।

श्री सत्येन्द्र नाथ 'मतवाला' बभनगावा (टाउन क्लब के पीछे) गांधी नगर, बस्ती 272 001 (उ.प्र.) [मो. : 09795570621]

पॉलीथीन पर विशेष

प्रस्तुति लेकर शानदार, विज्ञान प्रगति आती बार-बार।
नयी-नयी होती उपयोगी, बढ़ती इससे विज्ञान ज्योति।
शत्रु से स्नेह देखकर, लगता अचरज भारी।
'पॉलीथीन' को दूर करो, इससे मत रखना यारी।
माना विकास यात्रा में, यह भी है सबका सहभागी।
रहे जरूरत भर का रिश्ता, चकाचौंध न हो भारी।
शोध बताते हैं गिन-गिनकर, इससे हानि एक-एक कर।
पढ़ी-लिखी इतनी दुनिया, क्यों न रहती इससे बचकर।
सुन्दर चिकनी इसकी काया, सबके मन को भायी।
इस पर आश्रित आज समाज, भूल गया जहरीला राज।
न सड़ती है, न गलती है, बस मुश्किल ही मुश्किल है।
जहरीला धुआं उगलती है, कभी नहीं यह मिटती है।
दुष्प्रभाव पर दें हम ध्यान, इससे होगा सबका कल्याण।
होंगे इसके लाभ अनेक, खुशहाल होगा प्राणी प्रत्येक।
प्राचीन परम्परा थी बेहतर, जाते थे सब झोला लेकर।
पॉलीथीन का न था प्रयोग, खुशहाल थे सारे लोग।
लुप्त हो गयी वह संस्कृति, सभ्यता के पैमाने बदले।
बड़ा आदमी आज वही है, जो झोला लेकर न निकले।
जैसे चला स्वच्छ भारत अभियान,
ऐसे हो पॉलीथीन नियंत्रण का काम।
राष्ट्रवासी इसे अपनायें, समस्याओं से छुटकारा पाएं,
इसमें न हो कोई चूक, मंत्र इसे मानो अचूक।
दूसरी नहीं है कोई राह, सुरक्षित जीवन सबकी चाह।

**श्री बृजवासी लाल शुक्ला, पिकौरा शिवगुलाम (मालवीय रोड) गांधीनगर, बस्ती, जिला-बस्ती 272 001 (उ.प्र.)
[मो. : 09450122162, 09838422229]**

संग्रहणीय पत्रिका

मैं राजकीय पॉलीटेक्निक, गोरखपुर का अंतिम वर्ष का छात्र हूं तथा पिछले चार वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मैं इसके प्रत्येक अंक को सुरक्षित रखता हूं। विश्व खाद्य दिवस पर विशेष अक्तूबर 2014 का अंक प्राप्त हुआ जो महत्वपूर्ण जानकारियों को अपने अन्दर समाहित किये हुए था। 'शैवाल ईंधन : भविष्य शक्ति' विशेष लेख को पढ़कर ऊर्जा के एक नए स्रोत के बारे में जानने को मिला। 'औषधीय पादप' के अन्तर्गत 'पोषण पावर खाद्य : पंचकुटा' को पढ़कर पंचकुटा के प्रमुख गुणों व पारंपरिक महत्व के बारे में जानकारियां मिलीं। वास्तव में हमें पॉलीथीन व प्लास्टिक के दुष्प्रभावों को समझना चाहिए। इम सस्ते, सुन्दर व सुलभ के चक्कर में इन्हें उपयोग कर स्वयं को तथा सम्पूर्ण देश के पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं। अतः हमें इसके प्रति जागरूक होकर नई पहल करनी चाहिए।

**श्री सुजीत शर्मा, (पर्यावरण चिंतक) ग्राम व पो. सिकटा, जनपद - कुशीनगर 274 303 (उ.प्र.)
[मो.: 09451260040, 09792923689;
ई-मेल : sujit1996gkp@gmail.com]**

विज्ञान का अनोखा ज्ञान

मैं विज्ञान प्रगति का एक नया पाठक हूँ। मैं कक्षा नवीं का छात्र हूँ, और आगे भविष्य में वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ। मुझे नये-नये प्रयोग करना बहुत अच्छा लगता है। मुझे विज्ञान प्रगति के बारे में डा. दिलीप गंगवार जी ने बताया और उन्होंने मुझे विज्ञान प्रगति की बहुत सारी प्रतियां पढ़ने के लिए दीं और मुझे विज्ञान से जुड़ी बहुत सारी जानकारियां प्रदान कीं। जब मैंने विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2014 का अंक पढ़ा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। इसी अंक में शुभदा कपिल जी द्वारा लिखित विशेष लेख 'शैवाल ईंधन : भविष्य शक्ति' बहुत ही अच्छा और ज्ञानवर्द्धक लगा। इसे पढ़कर मैंने जाना कि पौधों से भी जैव ईंधन (बायोडीज़ल) बनाया जा सकता है।

मैं आगे भी विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक नियमित रूप से पढ़ूंगा और अपने सभी सहयोगियों को भी इस विज्ञान के अनोखे ज्ञान की पत्रिका विज्ञान प्रगति को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूंगा। इसी अंक में दिव्या जैन जी द्वारा लिखित 'पॉलीथीन हटाएं' बहुत अच्छा लगा। इससे पर्यावरण में होने वाली तमाम हानियों के बारे में जानकारी मिली। मेरे दादा जी ने गांव के सभी लोगों की एक बैठक बुलवाकर सभी को बताया कि अपने गांव में पॉलीथीन का प्रयोग बिल्कुल न करें। मेरी तरफ से विज्ञान प्रगति की टीम को धन्यवाद।

श्री नीलेश गंगवार, सुपुत्र श्री हरीश कुमार गंगवार, ग्रा.-पुरैना, पो. - मुडिया हुलास, तहसील - बीसलपुर, जिला- पीलीभीत 262 201 (उ.प्र.) [मो. : 09761222965, 09837974206]

ज्ञान का खजाना

मैं विज्ञान प्रगति की नियमित पाठिका हूँ। मेरी नजर में विज्ञान संबंधी जानक ारियों की विज्ञान प्रगति से बेहतर शायद ही और कोई पत्रिका हो। यह पत्रिका जानकारियों का खजाना तो है ही साथ ही इसमें प्रश्नोत्तर के माध्यम से समस्या का समाधान भी उपलब्ध है। मैं चूंकि 11वीं विज्ञान की छात्रा हूँ इसलिए यह पत्रिका मेरे जैसे विद्यार्थियों के लिए चमत्कारिक है। वर्तमान में हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान चलाया हुआ है जो बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है। मैं विज्ञान प्रगति के माध्यम से निवेदन करना चाहूंगी कि इसमें सभी लोगों को अवश्य सम्मिलित होना चाहिए।

सुश्री दिव्या जैन, 298/4 गांधीनगर, चित्तौड़गढ़ 312001 (राज.)

आपके पत्र

वास्तविक ज्ञान

मैं प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका विज्ञान प्रगति का विगत तीन साल से नियमित पाठक हूँ। जब मैंने पहली बार विज्ञान प्रगति को देखा तो पैरों की तले की जमीन निकल गई। जिस प्रकार छात्र अच्छे अंक पाने के लिये किताबी कीड़ा हो जाता है उसी प्रकार विज्ञान की प्रगति का आम जन तक लोकप्रिय भाषा में पहुंचाने का कार्य विज्ञान प्रगति कर रही है। अपनी मंजिल पाने के लिये हमारे वैज्ञानिक रात-दिन एक रहे हैं। आज हम वैज्ञानिक क्रांति के दौर से गुजर रहे हैं। मंगल पर भी जीवन जीने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। यह सच है कि जैसे-जैसे लोगों में जानने समझने और विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ रही है तो उनके पास जानकारी के साधन व साहित्य भी आ रहे हैं। मुझे विज्ञान के प्रति भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों के नजरिये से लगता है कि ऐसा कौन सा कारण है कि स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिये भारी अनुदान और कई मामलों में तो पूरा पैसा सरकार से मिलने के बाद भी लोग अपने घरों में शौचालय नहीं बनवा रहे हैं तथा इस ओर ध्यान नहीं दे रहे। मुझे विज्ञान प्रगति पढ़ने के बाद लगा कि यही एक ऐसी पत्रिका है जो लोगों के अंधविश्वास को दूर कर सकती है तथा विज्ञान के वास्तविक ज्ञान को लोगों तक पहुंचा सकती है।

श्री रोहित कुमार सिकौहुला, सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र प्रजापति, ग्रा. - सौंखर, पो. - कुण्डौरा, ब्लाक - सुमेरपुर, तहसील - हमीरपुर (उ.प्र.) [मो. : 07309176717;
ई-मेल : rohitsikauhula8585@gmail.com]

रोचक अंक

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका के हर अंक का दीवाना हूँ। मुझे अक्तूबर 2014 का अंक बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक लगा। पश्चिम अफ्रीका में फैली महामारी 'इबोला' के बारे में जानकर बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। विज्ञान प्रगति का प्रत्येक स्तंभ ज्ञानवर्धक होता है। दिव्या जैन का लेख 'पर्यावरण बचाएं पॉलीथीन हटाएं' बहुत ही अच्छा व ज्ञानवर्धक लगा। मैं इस पत्रिका के माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि किसी भी लेखक के पास ग्रीन हाउस के बारे में संपूर्ण जानकारी हो तो कृपया करके वह इस पत्रिका के माध्यम से हमारा ज्ञान बढ़ाएं। मैंने विज्ञान प्रगति के पुराने अंकों को संभाल कर रखा है। अंत में विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को मेरा आदर सहित नमस्कार।

श्री लक्केश कुमार शर्मा, सुपुत्र श्री सुभाष शर्मा, वीपीओ.- चक महाराजका, जिला - श्रीगंगानगर 335 001 (राज.)
[मो. : 07742218787; ई-मेलः love.koki23@gmail.com]

अनमोल पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति की विगत तीन वर्षों से नियमित पाठिका हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति बहुत ही ज्ञानवर्द्धक और रोचक पत्रिका लगती है। मैंने होमसाइंस में ग्रेजुएशन किया है फिर भी मेरा लगाव विज्ञान के प्रति हमेशा ही रहा है। जब अक्तूबर माह का अंक मेरे हाथ में आया तो उसमें छपा लेख 'वाह क्या बात है आपके मुंह में कीड़े-मकोड़े' पढ़कर पहले तो अजीब-सा लगा लेकिन थोड़ी देर बाद सारी भ्रातियां दूर हो गईं। इसी अंक में प्रकाशित लेख 'शैवाल एक भविष्य का ईंधन' पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई और वैसे भी इस समय ईंधन पर संकट मंडरा रहा है। अगर शैवाल से बायोडीज़ल बनाने में विज्ञान सफल हो गया है तो यह बहुत ही खुशी की बात है। इससे हमें काफी सहायता मिलेगी और बायोडीज़ल से प्रदूषण भी कम होगा अर्थात् हमारा पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा। और इसी अंक में प्रकाशित इबोला नामक एक बीमारी जोकि महामारी के रूप में फैलती जा रही है, के बारे में पढ़कर काफी चिंतित हुई क्योंकि यह एक भयंकर बीमारी है और अभी तक इसके इलाज के लिए कोई वैक्सीन तक नहीं बन पायी है। इसको लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन भी चिंतित है कि किस तरह इस भयंकर बीमारी से निपटा जाये। मुझे हर माह की इस अनमोल विज्ञान पत्रिका विज्ञान प्रगति का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मेरी तरफ से विज्ञान प्रगति की टीम को कोटि-कोटि धन्यवाद।

श्रीमती टिवंकल गंगवार, पत्नी डॉ. बी.एल. गंगवार (नेत्ररोगविशेषज्ञ) अम्बे आई केयर एण्ड ऑप्टिकल सेंटर निकट-जहानाबाद इ. कालेज कमल टैण्ट के पास, जहानाबाद, जिला-पीलीभीत 262001 (उ.प्र.) [मो. : 08954785770]

पर्यावरण रक्षक पत्रिका

यदि हम विशेष लेख 'पॉलीथीन हटाएं' की बात करते हैं, तो विकास के क्रम में पॉलीथीन को हम सबने अपना लिया है। कुछ लोगों ने जरूरत के लिए अपनाया तो बहुतों ने नफासत के लिए। इस लेख में जिन समस्याओं का ज़िक्र किया गया है, उन्हें मैं बहुत ही करीब से जानता हूँ। हम लोगों ने अपने बस्ती जनपद में पॉलीथीन हटाओ, नगर को स्वच्छ बनाओ' का अभियान केवल इसलिए चलाया था क्योंकि नाला सफाई के लिए बाहर से आए मजदूरों की गैंग ने इसलिए सफाई करने से इनकार कर दिया था क्योंकि पॉलीथीन इतनी संख्या में भर गयी थीं कि उसे हटाने की कोई कोशिश कामयाब ही नहीं हो पा रही थी। तो हम सबने सोचा कि इतनी मुश्किल एक ऐसी चीज खड़ी कर रही है तो हम सब इसे अपने संयम से आसानी से हटा सकते हैं। जरूरत है बस कार्य संस्कृति में थोड़ा बदलाव लाने की। जानवरों का ही नहीं मनुष्यों का जीवन भी पॉलीथीन के कारण खतरे में पड़ रहा है। इस प्रेरणादायी, अनुभवपरक, तथ्यात्मक प्रस्तुति के लिए सुश्री दिव्या जैन को बहुत-बहुत बधाई। विज्ञान प्रगति वास्तव में पर्यावरण रक्षक का भी कार्य कर रही है। विज्ञान प्रगति में कविताओं के माध्यम से भी काफी 'सरस' प्रस्तुतियां आ रही हैं, नए लेखकों को स्थान मिल रहा है। यह एक शानदार पहल है, इससे विज्ञान जगत के बारे में जानकारी रखने के साथ ही लिखने और अपना लिखा हुआ विज्ञान प्रगति जैसी विश्व स्तरीय पत्रिका में छपा देखने की इच्छा पूरी हो रही है। निश्चित ही उदारतापूर्वक दिया जा रहा यह प्रोत्साहन भविष्य में श्रेष्ठतम् लेखकों, रचनाकारों की नर्सरी तैयार कर रहा है। इसके सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे। विज्ञान प्रगति परिवार के लिए हमारी अनन्त शुभकामनाएँ हैं, माह दिसम्बर के क्रिसमस पर्व व नववर्ष 2015 के स्वर्णिम प्रभात की सभी पाठकों, लेखकों को हार्दिक बधाई।

डा. वी.के. वर्मा, जिलाध्यक्ष, रिसर्च सोसाइटी ऑफ होमियोपैथी इण्डिया, पटेल एस.एम.एच. हास्पिटल, गोटवा, कटया, जिला-बस्ती 272001 (उ.प्र.) [मो. : 09415163328, 09559669921]

भारत का विज्ञान रत्न

मैं पिछले तीन वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। जुलाई अंक में अपनी बात 'बड़ी कमाई साफ सफाई' बहुत ही अच्छी और ज्ञानवर्द्धक लगी। इसी अंक में बायोप्लास्टिक शीर्षक से नवीन जानकारियां मिलीं। जब अगस्त माह का अंक मेरे हाथ में आया तो मुझे विज्ञान क्विज़ के अन्तर्गत 'पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान' बहुत ही ज्ञानवर्द्धक और महत्वपूर्ण लगा। विज्ञान क्विज़ स्तंभ प्रतियोगियों के लिए बहुत लाभदायक रहता है। इससे कई प्रश्न प्रतियोगी परीक्षाओं में मिल जाते हैं। वैसे तो यह पत्रिका सभी वर्ग के लोगों के लिए ज्ञानवर्द्धक है लेकिन खास तौर से विज्ञान विषय से जुड़े युवाओं के लिए तो विज्ञान का भण्डार (अनमोल रत्न) है। मुझे हर माह के अंक का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मैं अपने सभी दोस्तों को विज्ञान प्रगति पत्रिका पढ़ने को देता हूं और पढ़ने को प्रोत्साहित भी करता हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति 'भारत का विज्ञान रत्न' लगती है।

श्री देवेन्द्र कुमार गंगवार, सुपुत्र श्री दीनानाथ गंगवार, ग्राम-पंसोली, पो. दलेलगंज, तहसील व जिला- पीलीभीत 262 001 (उ.प्र.) [मो. : 09410627368;
ई-मेल : dileepgangwar1986@gmail.com]

ज्ञान का दर्पण

मैं अप्रैल 2013 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे इसके प्रत्येक अंक का बेसब्री से इन्तजार रहता है। इस पत्रिका में मुझे विज्ञान की बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। अतः मैं कह सकता हूँ कि विज्ञान प्रगति ज्ञान का दर्पण है। इसके 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' बहुत ज्ञानवर्धक होते हैं। अगस्त 2014 में प्रकाशित एक रिपोर्ट 'पृथ्वी को जीवनमय बनाये रखने का संकल्प' पंसद आया और इस अंक में वार और मार से बहुत-सी महत्वपूर्ण जानकारी मिली। विशेष लेख 'मेंढक : कितना जाना, कितना पहचाना' पसंद आया। मुझे विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक से नई-नई जानकारियां प्राप्त होती हैं। विज्ञान प्रगति गागर में सागर के समान लगती है। यह एक अनमोल, ज्ञानवर्द्धक व अग्रणी पत्रिका है। मैं इसके लिए सम्पादक मण्डल को धन्यवाद देता हूँ।

श्री भूपेन्द्र कुमार, सुपुत्र श्री दीना नाथ, ग्राम-पन्सोली, पोस्ट दलेलगंज, जिला-पीलीभीत 262 001 (उ.प्र.)